तरुण प्रकाश

जंगल पलाशों के	निजी जंजाल में
फिर दहकने लग गये, जंगल पलाशों के आ गया फिर गांव में, रस–राग का मौसम देह के अंदर चिटकती आग का मौसम फिर, बहकने लग गये कम बाहुपाशों के नापने को, प्रीति की, गहराइयों के दिन आ गये जिद्दी–हठी, अंगड़ाइयों के दिन फिर, गमकने लग गये, स्वर ढोल–ताशों के फिर, दहकने लग गये जंगल पलाशों के	गिर गया फिर एक दिन अंधे कुंये में फाइलों में, कुछ किताबों में गया और कुछ, सूखे हिसाबों में गया जुड़ गया कंठ पर, अटके जुंये में कुछ फंसा, अपने, बनाये जाल में और कुछ उलझा, निजी जंजाल में घुल गया कुछ, काल के, धुंधले धुंयें में गिर गया, फिर एक दिन अंधे कुंयें में
('नये–पुराने' गीत अंक–3, सितम्बर–1998 से साभार)	सम्पर्क– ई–2380, राजाजीपुरम लखनऊ–17